संस्कृति का वैश्वीकरण और ए.आई.

डॉ. शिल्पा रानी, सहायक आचार्य, राजनीति विभाग, ग्रामोत्थान विद्यापीठ गृह विज्ञान महिला महाविद्यालय, संगरिया, जिला हनुमानगढ, राजस्थान

भूमण्डलीकरण विभिन्न देशों, संस्कृतियों एवं लोगों के मध्य सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में बढ़ती हुई अन्तर्निर्भरता एवं पारस्परिकता की स्थिति है, जहां देश एवं काल की प्रासंगिकता समाप्त हो जाती है।

21वीं शताब्दी भूमण्डलीकरण की शताब्दी है। भूमण्डलीकरण शब्द आज अंतर्राष्ट्रीय बाजार में गुंजायमान है।

भूमण्डलीकरण के सांस्कृतिक तथा राजनीतिक परिदृश्य संबंधी आयाम भी हैं। भूमण्डलीकरण एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक देश की अर्थव्यवस्था वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ती एवं जिसका प्रभाव समाज, संस्कृति, राजनीति एवं अन्य क्षेत्रों पर भी गहरे रूप में पड़ता है। यह विश्व स्तर पर देशों की निर्भरता की बढ़ती हुई प्रवृत्ति है तथा यह सीमा से परे अंतर्राष्ट्रीय पूंजी का तीव्र प्रहार और वस्तुओं तथा वस्तुओं के लेन–देन की क्रिया है। कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) केवल मानव के कार्य करने के तरीके को नहीं, बल्कि कार्य संबंधों को भी प्रभावित कर रहा है। इसका मानव के आर्थिक सामाजिक, सास्कृतिक औद्योगिक वैयक्तिगत जीवन पर अत्यंत प्रभाव पड़ा है। प्रस्तुत शोथ पत्र में ए.आई. के मानव जीवन पर प्रभाव को गुण दोषों के तुलनात्मक अध्ययन के सापेक्ष कप में किया गया है।